पर्दे की हिफ़ाज़त.....कर्बला में

असदुल उलमा मौलाना सैय्यद असद अली साहब क़िब्ला, इलाहाबाद

दर्सगाहे कर्बला जहाँ इन्सानियत के सभी हिस्सों के लिए एक बेमिसाल और सबसे ऊँची अमली दर्सगाह है वहाँ पर्दे के ज़रूरत और अहमियत को भी मेराजे कमाल पर दिखाने के लिए काफी है।

क़यामत की गर्मी, लम्बा-चौड़ा रेगिस्तान, गर्मी, तपिश, लू, सूरज की तेज़ी दरिया से दूर इमाम ख़ेमें लगवा रहे हैं बहुत ही एहतेमाम और ग़ौर और फ़िक्र के साथ ऐसी जगह तलाश की जा रही है जहाँ पाकदामन बीबियों की इज़्ज़त की हिफ़ाज़त हो सके और इसको भी कम समझा जाता है ख़ेमे के चारों तरफ ख़न्दक़ खोदने का हुक्म दिया जाता है ऐसे माहौल में ऐसे हालात में ऐसे मौसम में प्यास का ख़याल कम है पर्दे का ज़्यादा है।

ये ख़याल उस वक़्त भी जब सब मौजूद हैं और उस वक़्त भी जब कोई नहीं रह गया जेहाद में लगे हुए हैं, दुश्मनों को भगा कर फ़ुरात के साहिल पर पहुँच गये घोड़े को दरिया में डाल दिया है घोड़े से फरमाते हैं कि तू भी प्यासा है और मैं भी प्यासा हूँ तू पानी पी ले घोड़े की लगाम को ढीला किया और उसको इतमिनान दिलाने के लिए चुल्लू में पानी लिया कि एक झूठा बोला कि आप इधर हैं और उधर अहले हरम की तरफ फौज के हमले का रुख़ है, हज़रत ने पानी चुल्लू से फेंक दिया और फ़ौरन ख़ेमे की तरफ वापस हो गये।

इमाम जानते थे कि ऐसा नहीं है, मगर औरतों की अज़मत और पर्दे की अहमियत और ज़रूरत पर रौशनी डालना मक़सद था। इसी तरह आप जेहाद करते हुए जब तक़रीबन दो हज़ार लोगों को जहन्नम भेज चुके तो साद के लड़के ने लोगों को हिम्मत दिलाना शुरु की और कहा तुम लोगों को कुछ पता भी है किस से लड़ते हो, अली[अ०] के लाल का मुक़ाबला है इसके बाद उसने तीर चलाने वालों को हुक्म दिया कि चारो तरफ से घेर कर तीरों की बारिश करो उस वक़्त वह फौजी इमाम और उनके अहले हरम के बीच आ गये और तीरों की बारिश होने लगी इमाम उन बीच में आने वालों को बर्दाश्त न कर सके और आले मुहम्मद[स०] के दुश्मनों को अहले हरम के ख़ेमों के इतने क़रीब न देख सके फ़ौरन पुकार कर फरमाया ऐ अबूसुफ़यान की औलाद के मानने वालो तुम्हारी ग़ैरत और हमियत क्या हो गयी औरतों से तुमको क्या मतलब मुझ से लड़ो और जब तक मैं ज़िन्दा हूँ अहले हरम से मत भिड़ो।

और उस वक़्ते देखिये जब इमाम घोड़े की पीठ से कर्बला की ज़मीन पर आ गये हैं हज़ारों ज़ख़्म जिस्म पर और बहत्तर दाग़ दिल पर, ज़ालिम आपका सर अलग करना चाहते हैं मगर हिम्मत नहीं पड़ती क़रीब जा-जाकर वापस भाग आते हैं कुछ देर के बाद इम्तिहान के तौर पर ये जानने के लिए कि ज़िन्दा हैं या नहीं ये हुक्म दिया गया कि फौज का रुख़ अहले हरम के ख़ेमों की तरफ़ करके बढ़ो मालूम हो जायगा। हुसैन[अ०] ने जिस वक़्त अहले हरम के ख़ेमों की तरफ जाने की आहट महसूस की कोहनियों पर ज़ोर देकर सर उठाया और फ़रमाया अभी मैं ज़िन्दा हूँ इधर आओ।

पर्दे की अहमियत को जिस शान से कर्बला में इस्मत व तहारत के चाहने वालों ने पेश किया उसकी मिसाल वह ख़ुद आप हैं। माओं को बेटों ने रुख़सत कर दिया, बहनों ने भाईयों को रुख़सत कर दिया, फूफियों ने भतीजों को रुख़सत कर दिया, ख़ालाओं ने भांजों को रुख़सत कर दिया और बीबियों ने अपने वारिसों को

रुख़सत कर दिया वहाँ जहाँ से कोई जाने वाला ज़िन्दा वापस नहीं आया लेकिन रुख़सत के वक़्त किसी बीबी ने पर्दे की हदों से बाहर क़दम नहीं रखा और जब इन जाने वालों की आख़िरी आवाज़ आयी तब भी पर्दे की हदों का ख़याल रखा और जब उनकी लाशें ख़ेमें में आने लगीं तो किसी बीबी ने ख़ेमे से बाहर निकल कर उनका इस्तेक़बाल नहीं किया जो कुछ नौहा और मातम हुआ ख़ेमें के अन्दर हुआ।

यहाँ तक कि जब वह क़यामत का वक़्त आ गया कि कर्बला का ताजदार ज़मीन पर दुश्मनों के चंगुल में था और हर एक बढ़-बढ़ कर वार कर रहा था तो उस वक़्त भी अहले हरम की एक-एक फ़र्द ने पर्दे का ख़याल रखना अपना फ़र्ज़ समझा उस वक़्त अगर बीबियाँ तलवार लेकर आ जातीं तो इतनी आसानी से हुसैन[अ०] का सर अलग नहीं हो सकता था।

सब शहीद हो गये, हुसैन[अ०] का सर नेज़े पर उठ चुका जीत के ढोल बजने लगे और पूरी कायनात में हंगामा हो गया मगर अहले हरम को हुसैन[अ०] जहाँ-जहाँ अपने-अपने ख़ेमों में छोड़ गये थे वह सब वहीं पर रहे और उस वक़्त तक रहे जब तक आग नहीं लगायी गयी और ख़ुद आग लगाना इस बात का सुबूत है कि अहले हरम ख़ेमे में मौजूद थे वरना आग क्यों लगायी जाती और आग लगाने के बाद भी जब तक आख़िरी ख़ेमा बाक़ी रहा बाहर नहीं निकलीं और आख़िरी ख़ेमे में आग लग जाने के बाद भी इमामे वक़्त की इजाज़त का इन्तिज़ार करती रहीं और पर्दे का हुक्म इमाम के हुक्म से ख़त्म हुआ तब बाहर निकलीं। ये है कर्बला जैसे माहौल में पर्दे की हिफ़ाज़त, उम्मीद है मिल्लत की बहनें ध्यान देंगी।

✦✦✦